नीली साइकिल

सुशील शुक्ल

दोनों साइकिलें बहुत धीमी चल रही थीं। एकाध मिनिट में कोई पैर आकर पैडल को धक्का मार जाता। आज दोनों ही साइकिलों के पास खूब वक्त था। एक घण्टे में साइकिलों को डेढ़ किलोमीटर तय करना था। पाँच मिनिट में दो किलोमीटर तय करना ज़्यादा आसान है पर एक घण्टे में डेढ़ किलोमीटर तय करना थोड़ा मुश्किल होता है। लेकिन दोनों साइकलों को मज़ा बहुत आ रहा था। वे आसपास से निकलती हुई हाँफती-खटर-पटर करती साइकिलों को देखती जातीं। और इस बात से खुश हो जातीं कि वे आराम से चल सकती हैं।

उनके मालिक भी तो आज कितने खुश थे। एक मालिक का नाम था जतिन और दूसरे का अर्शी। दोनों शा.उ.मा.वि. नाम के एक स्कूल में आठवीं में पढ़ते हैं।

सुबह होती। "जत्तू उठ, जत्तू उठ, आठ बज गए।" रोज़, घर के अन्दर से ऐसी आवाज़ें घर के बाहर आती थीं। वक्त निकलता चला जाता। बड़ी मान-मनौव्वल के बाद जत्तू अपना बिस्तर छोड़ता। स्कूल जाने के थोड़े पहले वह एक कपड़ा लेकर आता और साइकिल को ठीक-से पौंछता-झाड़ता। कभी-कभी मम्मी की सिलाई मशीन का तेल चेन में डाल देता। तेल डालने के बाद वह स्टैण्ड पर खड़ी साइकिल को कुछ पैडल मार देता। जैसे ही उसका यह काम खत्म होता वो तीन बार घण्टी बजाता। साइकिल को अकसर लगता कि वो घण्टी बजाकर उसे बता रहा है कि काम पूरा हो गया है। पर, क्या सचमुच जत्तू साइकिल को यह बताने के लिए घण्टी बजाता था?

एक दिन जत्तू ने साइकल साफ की। तेल दिया। और नहाने चला गया। साइकिल को लगा कि आज वो घण्टी बजाना भूल गया है। साइकिल ने उसके जाते ही खुद ही अपनी घण्टी बजा दी। जत्तू तौलिया लपेटे झट से बाहर आया। उसने साइकिल की तरफ देखा। वहाँ कोई नहीं था। उसने इधर-उधर देखा और फिर खुद के सिर पर चपत मारी और हँसता हुआ फिर से नहाने चला गया। उस दिन नीली साइकिल रास्ते में वहाँ नहीं मिली जहाँ वो रोज़ मिल जाती है। कभी अगर वह न मिलती तो जत्तू साइकिल को स्टैण्ड पर खड़ी कर देता। बेवजह पैडल चलाता।आगे देखता,पीछे देखता। कभी ब्रेक लगाता, कभी हाथ से उल्टे पैडल मारता। उसका ऐसा बरताव साइकिल को समझ में नहीं आता था। वह यह सब समझने की कोशिश कर रही होती थी कि

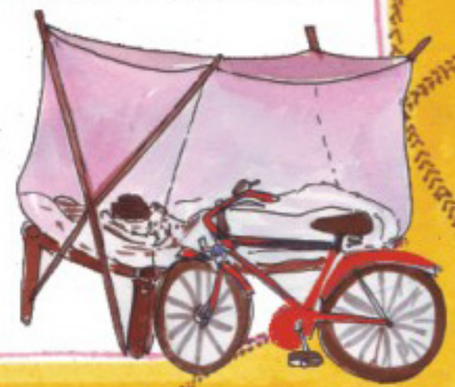

तभी नीली साइकिल आती दिख जाती। और जत्तू की साइकिल ठीक हो जाती। जत्तू झट-से तेज़-तेज़ साइकिल चलाना शुरू कर देता। पीछे से घण्टी की आवाज़ आती रहती। उस दिन दोनों साइकिलों के मालिक रास्ते भर चुप रहते। दोनों साइकिलें भी स्टैण्ड पर अलग-अलग जगह खड़ी रहतीं।

पर, आज तो देखो दोनों चुप होने का नाम नहीं ले रहे हैं। "तूने तो सब पढ़ लिया अर्शी मेरा क्या होगा। मैंने तो बस शुरू का एक पन्ना पढ़ा है।" जत्तू कह रहा था। "क्यों डर रहा है, कोई भी तो पढ़कर नहीं आता। तू कोई अकेला तो होगा नहीं। सब पर डाँट पड़ेगी। सब पर डाँट पड़ती है तो डाँट ज़्यादा नहीं लगती।" अर्शी ने समझाते हुए कहा। "खुद करें तो कोई बात नहीं, डाँटें या मारें क्या फर्क पड़ता है। पर अपने ही दोस्तों से पिटवाएँ यह क्या बात हुई। उस दिन मुझे कम्मू को मारना पड़ा। मैं अभी तक उससे बात नहीं कर पाता हूँ।" जत्तू बोला। "आज तू मुझसे छड़ी खाएगा।" अर्शी बोली। जत्तू बोला, "अकेले में मार लेगी तो चलेगा, पर कक्षा में सबके सामने अच्छा नहीं लगता।" "कहता तो तू सही है," अर्शी बोली। "टीचर यदि सज़ा देना ही चाहते हैं तो खुद दें। बच्चों को आपस में क्यों लड़वाते हैं?"

दोनों मालिक बातों में ऐसे लगे कि पैडल मारना ही भूल गए। साइकिलें कहना चाहती थीं कि स्कूल पहुँचने में देर हो रही है। पर कैसे कहतीं! और उस दिन स्कूल पहुँचने में सचमुच दस मिनिट की देरी हो गई थी। जत्तू बहुत डर रहा था। एक तो उसने अकबर वाला पाठ ठीक से नहीं पढ़ा था। और ऊपर से वह लेट पहुँच रहा था। उसने अर्शी से कहा, "तुम पहले जाओ।" अर्शी ने कहा, "नहीं, साथ चलते हैं। आधी-आधी मार या डाँट खा लेंगे। पहले जाने और बाद में जाने से पूरी-पूरी खानी पड़ेगी।" दोनों साथ पहुँचे। तब तक मास्टर जी पढ़ाना शुरू कर चुके थे। सात बच्चे खड़े थे। "चले आओ, चले आओ..." वे चबाते हुए बोल रहे थे। अकसर शब्दों को वे ऐसे ही चबाते हुए ही तो बोलते हैं। "अकबर ने दीन -ए-इलाही क्यों चलाया था? अर्शी बताओ!" वे कड़ककर बोले। जत्तू ने राहत की साँस ली। दीन-ए-इलाही तो दूसरे पन्ने पर था। उसने उस पाठ का सिर्फ पहला पन्ना ही पढ़ा था। वह ठीक से इस बात पर खुश हो भी नहीं पाया था कि मास्टर जी ने कहा, "नहीं, अर्शी नहीं, तुम बताओ जत्तू।" "सर, मुझे नहीं मालूम।" जत्तू ने धीमे से कहा। मास्टर जी छड़ी लेकर अर्शी के पास आए। अर्शी को छड़ी पकड़ाते हुए बोले, "पहले तुम उत्तर पूरा करो और फिर दो मज़ेदार छड़ी इस गधे को रसीद कर दो।" अर्शी ने किसी तरह छड़ी पकड़ ली। उसका सिर लटका हुआ था। मास्टर जी कह रहे थे, "हाँ, तुम सही बता रही थीं... आगे बताओ।" अर्शी को दीन-ए-इलाही सूझ ही नहीं रहा था। याद करने की सारी कोशिशें बेकार हो रही थीं। मास्टर जी ने वही सवाल विकास से पूछा। विकास ने सही उत्तर दिया। मास्टर जी ने उसे सज़ा देने का हक दे दिया था। दो छड़ियाँ अर्शी की हथेलियों पर पड़ीं और दो जत्तू की हथेलियों पर।

स्टैण्ड के पास जाकर दोनों ने अपनी हथेलियाँ देखीं। जत्तू की हथेलियों पर छड़ियों के मोटे निशान उभर आए थे। "मुझे तो उसने धीमे से मारीं। देख, कितने पतले निशान हैं।" अर्शी अपनी हथेलियाँ जत्तू को दिखाते हुए बोली। "जत्तू, चल छड़ियाँ बदल लें।" अर्शी हँसते हुए बोली और उसने अपनी दोनों हथेलियाँ जत्तू की हथेलियों पर उलट दीं।

चित्र: कनक